दोहा सुमिरि सीय नारद बचन उपजी प्रीति पुनीत।
चकित बिलोकति सकल दिसि जनु सिसु मृगी सभीत ॥229

अर्थ: नारद जी के वचनों का स्मरण करके सीताजी के मन में पवित्र प्रीति उत्पन्न हुई। वे चकित होकर सब ओर इस तरह देख रही हैं मानो डरी हुई मृगछौनी इधर-उधर देख रही हो ॥

डॉ. बलराम कुमार
हिन्दी-विभाग
डॉ. एल. के. वी. डी.
कॉलेज ताजपुर
समस्तीपुर

सिय सोभा हियँ बरनि प्रभु आपनि दसा बिचारि।
बोले सुचि मन अनुज सन बचन समय अनुहारि ॥
230

अर्थ: [इस प्रकार] हृदय में सीताजी की शोभा का वर्णन

बलरामकुमार

करके और अपनी दशा को विचारकर प्रभु श्रीराम चन्द्रजी पवित्र मनसे अपने छोटे भाई लक्ष्मण से समयानुकूल वचन बोले - ।।

करत बतकही अनुज सन मन सिय रूप लोभान।
मुख सरोज मकरंद छबि करइ मधुप इव पान ।।
231

अर्थ : यों श्रीरामजी छोटे भाई से बातें कर रहे हैं, पर मन सीताजी के रूप में लुभाया हुआ उनके मुख-रूपी कमल के छविरूप मकरन्द-रस को भौंरे की तरह पी रहा है ।।

लताभवन तें प्रगट भे तेहि अवसर दोउ भाइ।
निकसे जनु जुग विमल बिधु जलद पटल बिलगाइ ।।
232

अर्थ : उसी समय दोनों भाई लतामण्डप (कुञ्ज) में से प्रकट हुए। मानो दो निर्मल चन्द्रमा बादलों के पर्दे को हटाकर निकले हों ।।

केहरि कटि पट पीत धर सुषमा सील निधान।
देखि भानुकुलभूषनहि बिसरा सखिन्ह अपान ।।

अर्थ : सिंहकी-सी (पतली, लचीली) कमर वाले पीताम्बर धारण किये हुए, शोभा और शील के भण्डार सूर्यकुल के भूषण श्रीरामचन्द्रजी को देखकर सखियाँ अपने-आपको भूल गयीं ।।

Scanned with CamScanner